सांख्याभिमत पुरुष का स्वरूप

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

सांख्य के पच्चीस तत्त्वों में पुरुष का अत्यन्त विशिष्ट स्थान है। यह पुरुष प्रकृति और महत् आदि से भिन्न और विपरीत है।सांख्याभिमत पुरुष नित्य मूलतत्त्व है। 'न प्रकृतिर्न विकृतिः' के अनुसार न तो यह किसी की प्रकृति है और न तो किसी की विकृति है अर्थात् न तो इससे कुछ उत्पन्न होता है और न यह किसी से उत्पन्न होता है। इस प्रकार यह न स्वयं ही स्वरूपतः विकारशील है और न किसी का विकार है।यह एक निर्विकार तत्त्व है।

पुरुष चेतन या आत्मतत्त्व है। वह विषयी, ज्ञाता और अनुभवकर्ता है। यह पुरुष शरीर, बुद्धि, इन्द्रियाँ, अहंकार और मन से भिन्न या विलक्षण है। पुरुष चैतन्यस्वरूप है। चैतन्य उसका स्वभाव है। वह परम विशुद्ध परात्पर चैतन्य है, आत्मतत्त्व है। परमार्थिक ज्ञाता वह है। वह समस्त ज्ञान और अनुभव का अधिष्ठान है। वह स्वतः सिद्ध और स्वप्रकाश है। वह शुद्ध विषयी है। वह कभी किसी विषय का ज्ञेय नहीं बन सकता। वह साक्षी है, कूटस्थ नित्य है, निष्क्रिय और अपरिणामी है। वह सब प्रकार के परिणाम, विकार, परिवर्तन तथा क्रिया से सर्वदा और सर्वथा अस्पृष्ट है। व्यापक और विभु है।

पुरुष के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए सांख्यकारिकाकार का कथन है-

त्रिगुणमविवेकि विषयः सामान्यमचेतनं प्रसवधर्मि।

व्यक्तं तथा प्रधानं तद्विपरीतस्तथा च पुमान्।।

इस कारिका पर विचार करने से ज्ञात होता है कि पुरुष अव्यक्त तथा व्यक्त से विपरीत है। इस प्रकार वह त्रिगुण न होकर गुणातीत है। अविविक्त अर्थात् संहत या संकीर्ण स्वरूप वाला न होकर असंहत या असंघटित स्वरूप वाले एक ही एकात्म तत्त्व के रूप में विविक्त या असंकीर्ण स्वरूप वाला है। ज्ञान का विषय न होकर विषयी अर्थात् विषयों का ज्ञान या अनुभव प्राप्त करने वाला है। पुरुषों में प्रत्येक का अपना-

E-Learning Material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

अपना स्वरूप केवल अपने-अपने द्वारा ज्ञेय या अनुभाव्य होने के कारण वह सामान्य न होकर विशिष्ट है। अचेतन या जड़ न होकर चेतन या चित्स्वरूप है। प्रसवधर्मी अर्थात् परिणामशील या विकारशील न होकर निर्विकार कूटस्थ तत्त्व है। वह हेतुमत् अर्थात् कारणरहित या स्वयं मूल, नित्य, व्यापक, निष्क्रिय या क्रियारहित, अनाश्रित अर्थात् किसी पर आश्रित न होते हुए स्वाधार, अलिङ्ग (किसी का कार्य न होने के कारण किसी का सूचक नहीं), निरवयव अर्थात् अवयवों से रहित होता हुआ अखण्ड एवं स्वतन्त्र या स्वाधीन है।

प्रकृति के साथ रहकर भी पुरुष पुष्कर-पलाशवन्निर्लिप्त है। प्रकृति से भिन्न है। प्रकृति और पुरुष एकक साथ मिलकर ही सृष्टि का सञ्चालन करते हैं, किन्तु प्रकृति जड़ है और पुरुष विवेकी। एक त्रिगुणात्मिका है तो दूसरा निर्गुण। एक सविषय है तो दूसरा अविषय। एक जड़ है तो दूसरा चेतन, एक परिणामी है तो दूसरा अपरिणामी। पुरुष न किसी का कारण है और न ही किसी का कार्य है। वह तो द्रष्टा, ज्ञाता और साक्षी है। प्रकृति के सारे बन्धनों से मुक्त है। यह तो नित्य और कूटस्थ है। यह निष्क्रिय, गतिहीन और उदासीन है। यह व्यापक है, चप्पे-चप्पे में व्याप्त है। यह चेतन होने के कारण समस्त सृष्टि के अचेतन पदार्थों का उपभोक्ता है। इसे लोग आत्मा के रूप में जानते हैं। यह दिक् कालातीत है। देश औौर काल से अपरिच्छिन्न है। यह प्रकृति से नितान्त विपरीत है। यह असामान्य, चेतन, परम विशुद्ध, आत्यन्तिक, दुःखरहित और राग-द्वेषशून्य, विधि-निषेध से परे है।

पुरुष की सिद्धि अनुमान के द्वारा होती है। सांख्य पुरुष की सिद्धि के लिए निम्न कारिका प्रस्तुत करता है-

संघातपदार्थत्वात् त्रिगुणादिवपर्ययादधिष्ठानात्।
पुरुषोऽस्ति भोक्तृभावात् कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्च।।

संघातपरार्थत्वात्— संघात रूप समस्त पदार्थ सर्वथा अन्य के निमित्त होने से वह अन्य संघात से भिन्न होना चाहिए। वह चेतन पुरुष है। संसार में देखा जाता है कि शय्या, आसन आदि अचेतन पदार्थों की संहिति स्वयं उनके लिए नहीं बल्कि अन्य के लिए होती है। उसी प्रकार त्रिगुण संहिति, महत्, अहंकार,

E-Learning Material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

तन्मात्रादि की संहति भी स्वयं उनके प्रयोजन के लिए न होकर अन्य के लिए होती है। वह अन्य ही पुरुष कहा जाता है।

त्रिगुणादिविपर्ययात्- संसार ककी समस्त वस्तुएं अविवेकी, अचेतन तथा त्रिगुणात्मक है किन्तु त्रिगुण में तादात्म्य भी है। इन गुणों के न्यूनाधिक्य से किसी तत्त्व में इनकी शून्यता-अभाव की सम्भावना होती है और वह तत्त्व है पुरुष। त्रिगुणत्व, अविवेकिता, विषमता, सामान्यता, अचेतनता तथा प्रसवधर्मिता-ये सभी गुण आदि हैं। इस संघात का उपभोक्ता अवश्य त्रिगुणादिरहित होगा। संघात त्रिगुणात्मक होने से उपभोग्य है तथा त्रिगुणातीत होने से पुरुष इनका उपभोक्ता है।

अधिष्ठानात्- अचेतन की प्रवृत्ति के लिए चेतन अधिष्ठान की अपेक्षा होने से भी चेतन पुरुष की सिद्धि होती है। वस्तुतः इस सृष्टि में जितने भी सुख-दुःख-मोहात्मक जड़ पदार्थ है, उनका अधिष्ठाता उनसे भिन्न कोई दूसरा तत्त्व होता है। अतः अचेतन पदार्थ किसी चेतन से अधिष्ठित होकर क्रियाशील होता है। यथा- अचेतन रथ स्वयं क्रियाशील नहीं होता अपितु चेतन सारथी के द्वारा गतिशील होता है। इसी प्रकार बुद्धि आदि सभी प्राकृत तत्त्व सुख-दुःख-मोहात्मक हैं। इनका भी कोई न कोई अधिष्ठाता अवश्य है और वह तत्त्व पुरुष के अतिरिक्त अन्य नहीं है।

भोक्तृभावात्- सुख, दुःख और मोह उत्पन्न करने वाली सारी वस्तुएं भोग्य हैं। जड़ या अचेतन होने के कारण ये सबके सब उपभोग्य हैं। अपने लिए इनका कोई उपयोग नहीं है। जैसे षड्रस व्यञ्जन से व्यञ्जन के लिए कोई उपयोग नहीं, पर उसका उपभोक्ता कोई अन्य व्यक्ति होता है, इसी तरह सुख-दुःख और मोहात्मक वस्तुओं का उपभोक्ता भी पुरुष है।

कैवल्यार्थ प्रवृत्तेश्च- यह पुरुष की सिद्धि का पञ्चम हेतु है। प्रकृति और महदादि सुख-दुःख-मोहात्मक होने से कैवल्य की प्राप्ति नहीं कर सकते, अपितु सुख-दुःख-मोहादि के स्वाभाव से रहित वह पुरुष ही है जो कैवल्य की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहता है।

E-Learning Material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi